

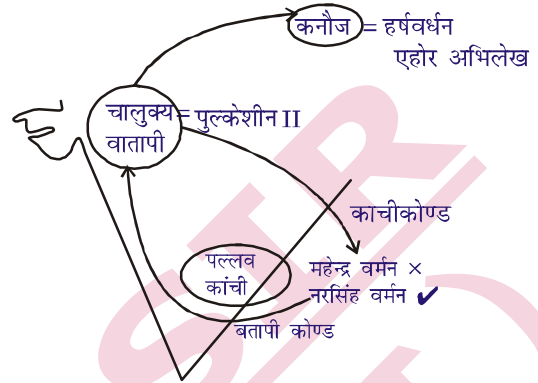
# दक्षिण भारत का इतिहास

## वातापी / बादामी (चालुक्य)

जय सिंह (संस्थापक)

पुलकेशिन-II  
 → हर्षवर्धन को हरा दिया (कन्नौज) नर्मदा नदी के तट पर  
 → महेन्द्र वर्मन को हराकर (काँचीकोण्ड)  
 → नरसिंह वर्मन द्वारा पराजित (वातापीकोण्ड)

कृतिवर्मन → अंतिम शासक (दान्तिदुर्ग द्वारा पराजित)



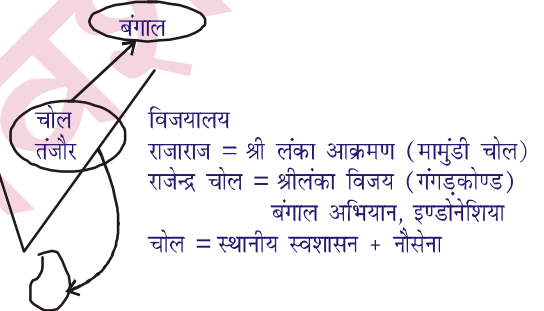
## राष्ट्रकुट

दान्तिदुर्ग (संस्थापक)  
 → सम्राज्य विस्तार  
 → राजधानी (मान्यखेट)

कृष्ण-I (एलोरा में कैलाश मंदिर)

ध्रुव (त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग पराजित)

अमोघ वर्ष  
 → कन्नर साहित्य के तीन कवि (पन्न, पोन्न, रन्न)  
 → योग्य शासक  
 → जिनसेन (जैन धर्म की शिक्ष)



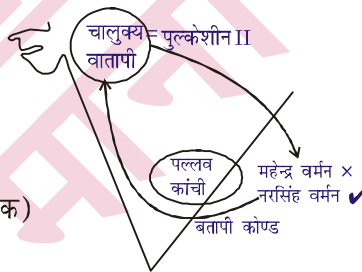
## पल्लव वंश

सिंह विष्णु (संस्थापक)

महेन्द्र वर्मन पुलकेशिन-II द्वारा पराजित

नरसिंह वर्मन  
 → वातापीकोण्ड  
 → पुलकेशिन-II को पराजित

अपराजित (चोल शासक आदित्य द्वारा पराजित)



## चोलवंश (पल्लव वंश के ध्वांशावधेश पर)

विजयालय (संस्थापक)

परांतक-I  
 → मदुरैकोण्ड  
 → उत्तर मेरु अभिलेख

राजाराज → शिलोन (श्रीलंका) आक्रमण (मामुंडी चोल)

राजेन्द्र-I  
 → सबसे प्रतापी चोलशासक, श्रीलंका पूरी तरह जीत लिया।  
 → बंगाल आक्रमण (महिपाल) - गंगई कोण्ड  
 → इण्डोनेशिया, सुमात्रा आक्रमण

पाल वंश ( 7वीं - 11वीं ) → संस्थापक : गोपाल ( ओदंतपुरी विश्वविद्यालय )

राजधानी मुंगेर

→ धर्मपाल ( भागलपुर विश्वविद्यालय )

→ महिपाल ( राजेन्द्र चोल का आक्रमण )

सेन वंश

→ सामंत सेन ( संस्थापक )

→ विजयसेन ( वास्तविक संस्थापक )

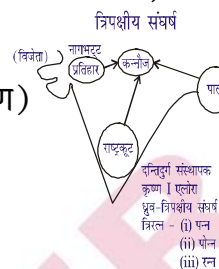
→ जयदेव गीतगोविंद

चंदेल वंश

→ M.P. क्षेत्र → नुनक संस्थापक

→ यशोवर्मन ( खजुराहो विष्णु मंदिर )

→ धंग ( कंदरिया महादेव )



राजपुत काल ( 800-1200 ) → पूर्व मध्यकाल

→ पृथ्वी राजरासो पुस्तक चंद्रवरदाई

→ 4वंशों का उदय

1. प्रतिहार

→ गुजरात → नागभट्ट ( संस्थापक )

→ वत्सराज ( त्रिपक्षीय संघर्ष )

→ मिहिरभोज → ( कन्नौज राजधानी )

→ यशपाल → अंतिम शासक

2. परमार

→ मालवा

→ उपेन्द्र

→ राजा भागे ( धारानगरी ) → ज्योतिष

3. चालुक्य

→ गुजरात - मुल राज संस्थापक

→ भीम-I ( दिलवाड़ा जैन मंदिर ) ( महमुद गजनवी सोमनाथ मंदिर लुटा )

→ भीम-II ( 1178 में मो. गोरी को हराया )

4. चौहान वंश

→ वासुदेव संस्थापक

→ अरुणोराज ( विग्रहराज → हरिकेली )

→ पृथ्वी राज चौहान

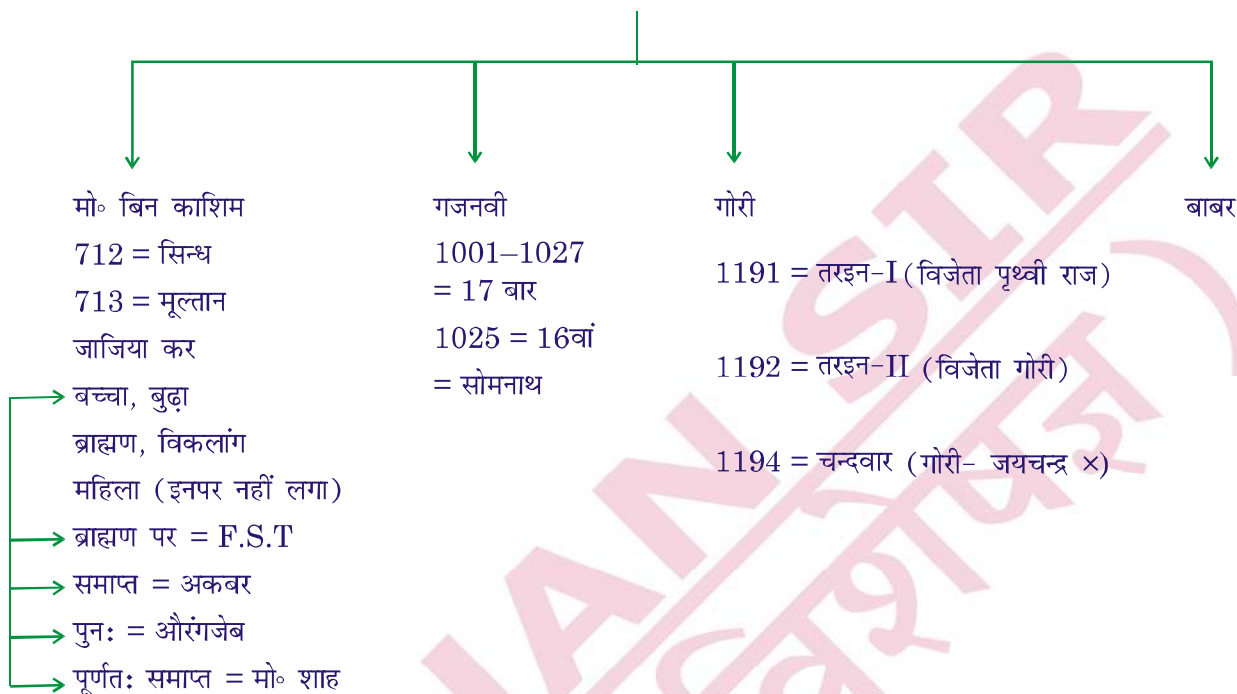
→ तराईन के प्रथम युद्ध ( 1191 ) में पृथ्वी राज चौहान ने मो. गोरी को पराजित किया

→ पृथ्वी राज और जयचंद की बेटी संयोगिता से विवाह

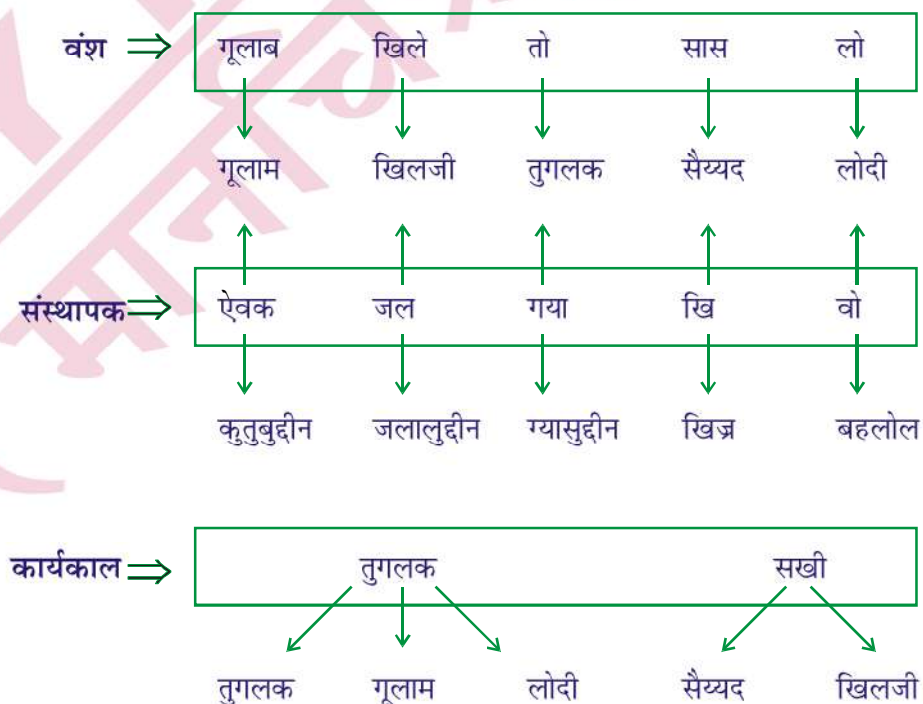
→ तराईन के द्वितीय युद्ध ( 1192 ) → पृथ्वी राज चौहान और मो. गोरी के बीच हुआ। इस युद्ध में पृथ्वी राज चौहान मारा गया।

→ चंदवार ( 1194 ) → मो. गोरी द्वारा जयचंद की हत्या

## Muslim आक्रमण



## दिल्ली सल्तनत



## गुलाम वंश (1206 – 1290)

### संस्थापक

- ★ कुतुबुद्दीन ऐबक (कुरान खान / लाखबक्स / हातिम)
- ★ गुरु - बख्तियार काकी, सेनापति = बख्तियार खिलजी (नालन्दा विश्वविद्यालय)
- ★ निर्माण = कुतुब मीनार
  - कुतुबुल इस्लाम मस्जिद (Delhi)
  - 2½ दिन का झोपड़ा (अजमेर)
- राजधानी = लाहौर, मृत्यु = चौगान (Pole) में घोड़े से गिरने से

### इल्तुतमिश

- ★ वास्तविक संस्थापक, चंगेज खां का आक्रमण
- ★ सिक्का तथा मकबरा निर्माण - कुतुबमीनार पूर्ण
- ★ वेतन के बदले भूमि = इक्ता व्यवस्था
- ★ 40 तुर्क सरदार = चालीस दल

### रजिया

- ★ असफलता का कारण = महिला होना।
- ★ रजिया का सम्बंध दिल्ली के मालिक याक़ुब से था = 1240 में अल्तुनिया से विवाह किया किन्तु डाकुओं ने हत्या कर दिया।

### बलबन

- ★ इसे उलूग खान
- ★ रक्त एवं लौह की नीति चालिसा दल समाप्त
- ★ इस्लामिक रिति के स्थान पर इरानी परम्परा लागू

### खिलजी वंश (1290 – 1320)

- ★ संस्थापक - जलालुद्दीन फिरोज खिलजी
- ★ अलाउद्दीन खिलजी (अली / गूरसप्प) = सिकन्दर-II
  - बाजार व्यवस्था घोड़ा दागना
- ★ इक्ता के स्थान पर नगद वार्षिक वेतन, सैनिकों को Tax Free वस्तु
- ★ अलाई मिनार, अलाई दरबार
- ★ सर्वाधिक मंगोल आक्रमण
- सेनापति-मलिक काफ़ुर
- ★ इसने पूरा भारत जीत-लिया किन्तु होयसल नहीं जित पाया।
- ★ निजामुद्दीन औलिया ने इसे कहा था मेरे घर में 10 दवाजे हैं।

#### चार प्रमुख कर

1. जजिया- गैर मुस्लिम
  2. जकात- मुसलमानों के आय पर
  3. खरात-मुसलमानों का भूमि कर
  4. खुम्स-सैनिकों से लुट पर लिया गया कर
- मकान → घड़ी  
चारागाह → चरी

- ★ कुतुबुद्दीन मूबारक शाह = अयोग्य या नग्न रहता था। खूद को खलिफा घोषित कर लिया इसकी हत्या खूसरो ने किया।
- ★ खूसरो की हत्या गाजि मलिक ने किया।

### तुगलक वंश (1320 – 1414)

- ★ **संस्थापक** = ग्यासूद्दीन तुगलक (गाजी मलिक)
- ★ नहर निर्माण, बंगाल अभियान, महल गिरने से मृत्यु
- ★ निजामुद्दीन औलिया ने कहा 'दिल्ली दूर है।'
- ☞ **मो. बिन तुगलक (जौना खान)** – स्वप्नशील / विरोधाभाष का मिश्रण
- ★ राजधानी परिवर्तन सांकेतिक मुद्रा, दिवान-ए-कोही नामक कृषि विभाग, साम्राज्य का बिखराव
- ★ इसके दरबार में मोरक्को से इब्नबतुता आया था जिसकी पुस्तक रेहला है।

### फिरोज शाह तुगलक (F.S.T.)

- |                                 |                              |
|---------------------------------|------------------------------|
| ☞ ब्राह्मणों पर जजिया           | ☞ कुतुबमीनार का पुर्ननिर्माण |
| ☞ नहरों का जाल                  | ☞ बाग-बगिचा बागवानी कृषि     |
| ☞ नगरों का निर्माण (Ex- जौनपुर) | ☞ सल्तनत का अकबर             |
| ☞ आत्म कथा-फतुहात-ए-फिरोज शाही  | ☞ सर्वाधिक दास               |
| ☞ बेरोजगारी भत्ता               |                              |

इसने अशोक के हरियाणा (टोपरा) तथा मेरठ अभिलेख को दिल्ली लाया।

- ★ अन्तिम शासक नसीरुद्दीन तथा इसके समय मंगोल सेनापती तैमूर ने आक्रमण किया और इस वंश का अंत हो गया।

### सैय्यद वंश (1414 – 1451)

- ★ संस्थापक = खिज़्र खां

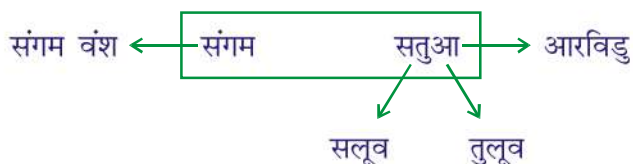
### लोदी वंश (1451 – 1526)

- ★ **संस्थापक** = बहलोल लोदी (यह अफगानी वंश था)
- ★ सिकन्दर लोदी ने 1504 में आगरा की स्थापना किया।
- ★ इब्राहीम लोदी 1526 के पानीपत के युद्ध में बाबर के हाथों मारा गया।

### विजय नगर साम्राज्य

- ★ विजय नगर साम्राज्य = राजधानी = हम्पी (तुगभद्रा नदी)
- ★ विजय नगर की स्थापना 1336 में हरिहर-एवं-वूक्क नामक दो भाइयों ने मो. बिन तुगलक के काल में किया।
- ★ पिता = संगम, गुरु = विद्याधर, भाषा = तेलगू

### विजय नगर के वंश





### संगम वंश

- ★ हरिहर-I – यह संस्थापक था इसके दरबार में सायान, नामक विद्वान
- ★ बूक्का-I – इसके काल में रायचुर पर अधिकार के लिए वहमनी से युद्ध हुआ, यह मो० शाह से पराजित
- ★ देवराय-I – इसे फिरोज शाह बहमन ने पराजित कर दिया
- ★ देवराय-II – इस वंश का सबसे महान शासक इसने श्रीलंका पर आक्रमण किया।
- ★ इसके दरबार में अब्दुल रज्जाक आया था जिसने मतला-ए-साहेन लिखा है।
- ★ इस वंश का अन्तिम शासक वीरूपाक्ष था।

### सालूव वंश

- ★ इसके संस्थापक सालूव नरसिंह थे इनकी हत्या नर सिंह ने कर दिया।

### तुलूव वंश

- ★ इसके संस्थापक वीर-नरसिंह थे।
- ★ सबसे प्रतापी शासक कृष्ण देव राय थे जो बाबर के समकालीन थे।
- ★ K.D.R. ने पुर्तगाल गवर्नर अल्वूकर्क से घोड़ा खरीदा
- ★ K.D.R. ने आमूक्त माल्थस तथा जामवतिकल्याणम पुस्तक लिखा।
- ★ इसके दरबार में तेलगू के 8 विद्वान रहने थे जिसे अष्ट-दिग्गज कहते हैं।
- ★ अन्तिम शासक = सदासिव राव बना जो 1565 के तालिकोटा के युद्ध में बहमनी की संयुक्त सेना से पराजित हो गया।

### आरविडू वंश

- ★ संस्थापक – तिरूमल
- ★ आरविडू को शिवाजी ने मराठा में मिला-लिया

**Note :** विजयनगर काल में वेतन के बदले जमिन दी जाती थी जिसे नायंगर व्यवस्था कहा गया।

**Note :** मुद्रा – पैगोडा

**Note :** इस समय 4 प्रकार की भूमि थी- (i) सिंचित, (ii) बगानी (iii) उसर (iv) वनभूमि

### विजय-नगर काल में आये विदेशी यात्री

यात्री	देश	शासक
निकोलो डे काण्टी	इटली	देवराय I
अब्दुर रज्जाक	फारस	देवराय II
बार्थोमा	इटली	वीर नरसिंह
बारबोसा	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय
डोमिंगोपाएस	इटली	कृष्णदेव राय
नुनिज	पुर्तगाली	अच्युतदेव राय

### वहमनी साम्राज्य-राजधानी = गूलवर्गा (1347)

- ★ इसकी स्थापना हसन गंगू (अलाउद्दीन बहमन शाह) ने मु० बिन तुगलक के शासन काल में किया।
- ★ वहमनी भाषा = मराठी, मुद्रा = हुड।

- ★ मो० शाह ने बूक्का-I को पराजित किया।
- ★ फिरोज शाह बहमन ने देवराय-I को पराजित किया।
- ★ इस वंश का अन्तिम शासक कलिमूल्ला था। इसके बाद बहमनी सम्राज्य 5 भागों में बंट गया- (i) बीजापुर, (ii) अहमदनगर, (iii) बीदर, (iv) बरार और (v) गोलकुण्डा।
- ★ 1565 के तलिकोटा के युद्ध में बरार को छोड़कर शेष 4 राज्य मिलकर विजय नगर का अन्त कर दिया।

राज्य	वंश	संस्थापक	वर्ष	क्षेत्र
1. बरार	इमादशाही वंश	फतेहउल्लाह ईमाद	1484	महाराष्ट्र
2. बीजापुर	आदिल शाही वंश	यूसूफ आदिल खान	1489	कर्नाटक
3. अहमदनगर	निजाम शाही वंश	मालिक अहमद	1490	महाराष्ट्र
4. गोलकुण्डा	कुतुबशाही वंश	कुली कुतुबशाह	1512	तेलंगाना
5. बीदर	बरीदशाही वंश	अमीर अली बरीद	1526	कर्नाटक

## मूर्ति कला तथा मंदिर निर्माण की शैली

### मूर्ति बनाने की शैली



**(i) गंधार शैली** – इस शैली का विकास कुषाण वंश के प्रमुख शासक कनिष्क के शासन काल में हुआ था। सबसे पहले इस शैली में मूर्ति मिट्टी, चूना और प्लास्टर को मिलाकर बनाई जाती थी लेकिन इस प्रकार की मूर्ति बहुत कमजोर होती थी इसलिए बाद में ये काले और भूरे रंग के पत्थर से बनाए जाने लगे। ये मूर्तियाँ मुख्य रूप से पश्चिमोत्तर भारत में बनाई जाती थी। जिसका प्रमुख केन्द्र तक्षशीला था। इस शैली की **95%** मूर्तियाँ महात्मा बुद्ध की बनी थी। इस शैली में महात्मा बुद्ध के बहुत बड़े घुंघराले बाल दिखाए गए हैं। इस शैली में महात्मा बुद्ध को बहुत बलशाली, बलिष्ठ शरीर (गठिला), योग करते हुए, ध्यान की मुद्रा में और युवा अवस्था में दिखाया गया है। इसमें महात्मा बुद्ध के पीछे होलोमंडल या प्रभामंडल सेप दिखाई गई है। कपड़े को दोनों ओर से लपेटकर पुरा शरीर ढका हुआ है।



इस शैली का उल्लेख वैदिक एवं सांस्कृतिक साहित्य में है। यह कला यूनान से प्रभावित है। इसलिए इसे ग्रीको इंडियन कला भी कहा जाता है। इस कला में मूर्ति बैठी, खड़ी आँखे बंद, योग और ध्यान मुद्रा में बनाई गई है। यह शैली अपोलो देवता से प्रभावित है।

**(ii) मथुरा शैली** – मथुरा शैली का विकास मुख्यतः उत्तर भारत में हुए थे। मथुरा, वाराणसी और कौशाम्बी इसके प्रमुख केन्द्र थे। इसकी शुरुआत मथुरा से हुई इसलिए इसे मथुरा शैली कहा जाता था। इस शैली में चौड़ा सिना, बालविहीन और नग्न मूर्तियाँ भी थी। ज्यादातर मूर्तियों में बायाँ हाथ आसनस्थ है और दाहिने हाथ को अभय मुद्रा (आशिर्वाद) मुद्रा में उठाये हुए हैं और कपड़े बाएँ कंधे पर पड़े हुए हैं। इस शैली में तीन धर्म की मूर्तियाँ मिलेगी बौद्ध + जैन + हिन्दू। यह शैली पूर्णतः भारतीय शैली थी। इसमें लाल रंग के पत्थर का प्रयोग हुआ है।



**(iii) अमरावती शैली** – इस शैली का विस्तार मुख्यतः दक्षिण भारत में थी। इस शैली में पूजा और योग को दिखलाकर कहानियों को दिखलाया गया है। इसमें कई मूर्तियाँ एक साथ बनाई गई थी। इस शैली की मूर्तियाँ मुख्यतः सफेद संगमरमर की बनाई जाती थी। इस कला की मूर्तियाँ जातक कथाओं की हैं। और इसे चित्रण के माध्यम से बनाया जाता है। ये दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश के अमरावती नामक स्थान पर विकास हुआ। इसलिए इसे अमरावती शैली कहा जाता था।



शैली	जगह	रंग	वंश	धर्म	अवस्था	संकेत
गंधार	पश्चिम भारत	काला	कुषाण	बौद्ध	योग	चिंता
मथुरा	उत्तर भारत	लाल	कुषाण	बौद्ध + जैन + हिन्दू	आशिर्वाद	प्रसन्नता
अमरावती	दक्षिण भारत	सफेद	सातवाहन	बौद्ध	ग्रुप	कहानी

## स्थापत्य कला

भारत में स्थापत्य कला में मंदिरों के निर्माण की शैली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।

भारत में प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण की जो शैली है वह मौर्य काल से प्रारंभ होती है और गुप्त काल में अपने चरम पर होती है।

मंदिरों का वर्तमान स्वरूप गुप्त काल की है।

### मंदिर निर्माण की शैली

नागर शैली

विमानन शैली  
(द्रविड़ शैली)

बेशर शैली

**(i) नागर शैली** – नागर शैली की मंदिर उत्तर भारत में देखने को मिलते हैं। यह उत्तर भारत में हिमालय से लेकर विंध्याचल पर्वत तक मिलते हैं। नागर शैली कि मंदिर का जो गुंबद होता है। वह नीचे चौड़ा होता है और जैसे-जैसे ऊपर जाता है पतला होते जाता है। यह गुंबद रेखीय होता है जिसे शिखर कहा जाता था शिखर के ऊपर एक रिंग बना दिया जाता है जिसे आमलक कहा जाता था। और आमलक के ऊपर एक कलश रख जाता था और कलश के बगल में एक ध्वज रखा जाता था। इसके शिखर ऊँचे नहीं होते हैं। शिखर के नीचे भगवान की मूर्ति रखी जाती है जहाँ भगवान की मूर्ति रखी जाती है उसे गर्भ गृह कहते हैं। पूरे मंदिर का सबसे प्रमुख जगह गर्भ गृह ही होता है। गर्भ गृह में ज्यादा भीड़ न हो इसलिए उसमें कई मंडप बने होते हैं ताकी वहाँ लोग प्रतीक्षा कर सके। गर्भ गृह के दरवाजे पर गंगा और यमुना की मूर्ति की मुर्ति होती थी। इस शैली की मंदिरों में दो प्रकार की सिढ़ी होती थी शुरूआत की जो सिढ़ी होती थी उसे जगती, चबुतरा अगली सिढ़ी को पिठ कहा जाता था। गर्भ गृह ओर मंडप के बीच खाली जगह नहीं होते थे। गर्भ गृह के अंदर ही पदक्षिणा पथ (परिक्रमा) होता था। नागर शैली की मंदिर कभी भी अकेली नहीं होती थी। इसे पांच मंदिर के ग्रुप में बनाया जाता था। इसीलिए इसे पंचायतन शैली कहा जाता था। इस मंदिर के चारों ओर बाउंडरी नहीं रहती थी। यहाँ किसी भी प्रकार का तलाब नहीं होता था क्योंकि उत्तर भारत में नदियों की कोई कमी नहीं है। और मंदिर में कोई भाव्य गेट नहीं होता है। इस शैली की कई विशेषता थी जो उड़िसा में है उसे उड़िया शैली उसकी एक शाखा मध्य प्रदेश में है जो कंदरिया महादेव खजुराहो का मंदिर है। एक शाखा गुजरात में भी है जिसे शोलंकी शैली कहते हैं।



**विमानन शैली / द्रविड़ शैली** – द्रविड़ शैली का विकास चोल और पल्लव काल में हुए थे। ये मंदिर हमें दक्षिण भारत में देखने को मिलती हैं। दक्षिण भारत में पानी की कमी होती थी इस शैली में वहाँ तलाब होते हैं। यह शैली कृष्णा नदी से लेकर पुरी दक्षिण भारत में है। इस शैली में भव्य मेन गेट होते थे। जिसे हमलोग इनटरेस या गोपुरा कहते थे। मेन गेट के कारण ही वहाँ चारदिवारी बनी होती थी। यह मंदिर भी पंचायतन शैली में ही था। मंदिर बीच में रहती थी इस शैली कि मंदिर सिद्धिनुमा होती है। और सिद्धिनुमा को ही विमानन कहा जाता था। इसी कारण इस शैली को विमानन शैली भी कहा जाता था। विमानन शैली में मंडप और गर्भ गृह सटा नहीं रहता है। उसमें अंतराल रहता है क्योंकि यही पर परिक्रमा किया जाता है। गर्भ गृह के बाहर दरवाजे पर यक्ष और यक्षीणी की मूर्ति लगी रहती है।



**बेसर शैली** – यह शैली नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है। यह शैली विन्ध्य से कृष्णा नदी तक मिलता है। इसमें खुले प्रदक्षिणा पथ होता है और मण्डप बहुत सुसजित होता है।

**कुछ प्रमुख शैली के उदाहरण-**

नायक शैली – मिनाक्षी मंदिर (मदुरै)

विजयनगर शैली – विट्ठल स्वामी मंदिर (विजय नगर), लोटस महल (हम्पी)

होयशल शैली-

पाल शैली –

**कुछ प्रमुख मंदिर और उसकी शैली**

**नागर शैली**

(i) भितरगांव मंदिर – कानपुर

दशावतार मंदिर – झांसी

लक्ष्मण मंदिर – सिहपुर

कन्दरिया महादेव मंदिर – खजुराहो (एम.पी.)

लिंगराज मंदिर – भुवनेश्वर (उड़ीसा)

जगन्नाथ मंदिर – पुरी (उड़ीसा)

सूर्यमंदिर – कोणार्क उड़ीसा

**द्रविड़ शैली**

(ii) वृहदेवश्वर मंदिर – तंजावुर

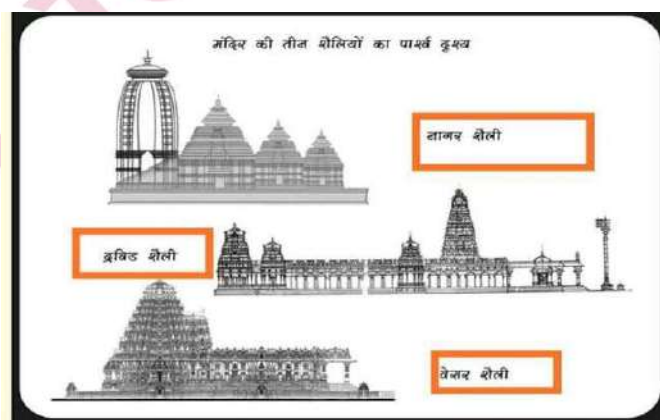
शिवमंदिर – गंगैयकोड चोलपुरम

महावलीपुरम रथ मंदिर – महावलिपुरम

**वेसर शैली**

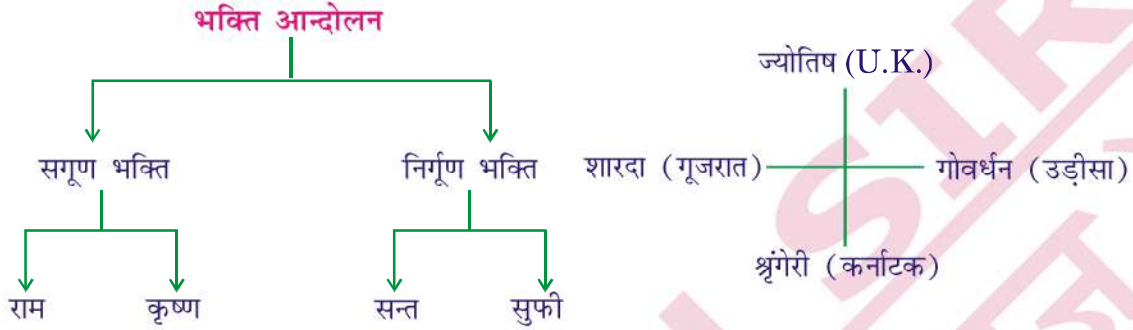
(i) डोडा वेसप्पा – दम्बल

बदामी के मन्दिर



## भक्ति आन्दोलन

- ★ भक्ति आन्दोलन दक्षिण भारत में नयनार शन्तों ने किया।
- ★ शंकराचार्य अद्वैतवाद का सिद्धांत दिया।



- ★ **राम भक्ति** - इसमें भगवान राम की पुजा होती है।
- ★ सबसे बड़े राम भक्त तुलसीदास थे (राम चरित्र मानस)
- ★ दक्षिण भारत में सबसे बड़े रामभक्त = त्यागराज थे।
- ★ **कृष्ण भक्ति** - सुरदास, चैतन्य महाप्रभु (बंगाल) तुकाराम
- ★ **सुफी शक्ति** - (1) चिश्त सम्प्रदाय = ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्त (अजमेर)  
(2) फिरदौसी सम्प्रदाय = यहिया मनेर मनेर शरीफ (पटना)
- ★ **सन्त भक्ति** - कबीर (जूलाहा), घन्ना, सेना, नानक, रैदास
- ★ **गुरु नानक** - इनका जन्म 15 अप्रैल, 1469 को पाकिस्तान के तलवन्डी/ननकाना साहिब में हुआ।
- ★ **चौथे गुरु** - राम दास को अकबर 500 विघा जमीन दिया।
- ★ **पांचवे गुरु** - अर्जून देव स्वर्ण मन्दिर, आदि ग्रन्थ पुस्तक जहांगीर ने इन्हें फाँसी दे दिया।
- ★ **नौवे गुरु** = तेगबहादुर की हत्या औरंगजेब ने किया।
- ★ **दसवें गुरु** = गुरु गोविन्द सिंह (26 Dec 1666) = सिखों का सैनिक रूप दिया जिसे खालसा कहते हैं।
- ★ **जन्म** - पटना साहिब, शिक्षा = अमृतसर (पंजाब)

